Page 1

MA, Semester II 11/02/2025

Paper 5, unit I

Topic— दीर्घिकृत अवधान (Sustained attention)

Nature and theory of sustained attention

किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरणों के दौरान दीर्घिकृत अवधान (Sustain attention) एक महत्वपूर्ण घटना है, जो व्यावहारिक दृष्टि से काफी महत्व रखता है। दीर्घिकृत अवधान निगरानी (Vigilance) की प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अधिक समय तक किसी घटना या परिस्थिति पर सतर्कतापूर्वक अपने ध्यान को केंद्रित रखता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान एक विशेष परिस्थिति में दीर्घिकृत अवधान का अध्ययन किया गया। उस समय रडार संचालकों (radar operators) में अवधान से संबन्धित समस्या देखा गया। उस रडार के संचालकों को दुश्मन के हवाई जहाज से रडार में उत्पन्न संकेतों की पहचान करनी थी। कुछ समय तक इस प्रकार के निगरानी कार्य के पश्चात संचालकों के कार्य-निष्पादन में गिरावट के लक्षण देखे गए। मैकवर्थ (Mackworth, 1950) ने पहला प्रयोग किया जिसमें इन्होंने रडार के अनुरूप प्रदर्शन हेतु एक घड़ी का उपयोग किया। इसलिए इसे घड़ी परीक्षण (clock test) कहा जाता है। इस घड़ीनुमा उपकरण में कोई सांकेतिक चिन्ह नहीं था केवल काले रंग की सूई (black pointer) थी जिसकी गति पर प्रयोज्य को सतर्कता के साथ निगरानी करने का निर्देश दिया गया।

घड़ी की सुई सामान्यतः 3"/sec की गति से चलती थी लेकिन बीच-बीच में सुई की गति 6"/sec हो जाती थी। प्रयोज्य को यह निर्देश दिया गया कि जैसे ही उन्हें लगे कि सुई की गति सामान्य से तेज है, वे घड़ी का बटन दबाकर अनुक्रिया करें। घड़ी की गति की दो घंटे तक सफलतापूर्वक निगरानी के कार्य में प्रयोज्य को लगातार दो घंटे तक लगाया गया। देखा गया कि लगभग आधे घंटे तक सतर्कता से दीर्घीकृत ध्यान देने के उपरांत प्रयोज्यों की सतर्कता में कमी आने लगी और प्रत्येक चार बार की गति में तेजी के संकेत में से 1 बार का संकेत पहचानने में प्रयोज्य असफल होने लगे। इस प्रयोग के आधार पर दीर्घीकृत अवधान की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों का अध्ययन करने की दिशा में मनोवैज्ञानिकों की अभिरुचि बढ़ी। इन अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ कि दीर्घीकृत अवधान की प्रक्रिया काफी तीव्र होती है। अतः दीर्घीकृत अवधान में व्यक्ति के सतत सक्रीय मानसिक एकाग्रता का स्तर ऊँचा होना अनिवार्य है।

दीर्घीकृत अवधान की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारकों में संवेदी कारक (Sensory factors), संकेत या उत्तेजना की उत्कटता (Signal conspicuity), पृष्ठभूमि घटना दर (background event rate), सामयिक एवं स्थानिक अनिश्चितता (temporal and spatial uncertainity) एवं परिणाम ज्ञान (Knowledge of result) आदि प्रमुख हैं।

इसके अलावे दीर्घकृत अवधान की व्याख्या (व्या) करने हेतु अनेक सिद्धान्त भी प्रतिपादित किए गए है।
जेरिसन एवं पिकेट (Jerison and Pickett, 1963) द्वारा प्रतिपादित प्रत्याशा सिद्धान्त (exceptancy theory) प्रमुख है। इस सिद्धान्त के अनुसार जिन संकेतों पर दीर्घकृत अवधान देना होता है उससे संबंधित पूर्व से संचित सूचनाओं (Stored information) तथा उन अवस्थाओं जिनमें कोई संकेत उत्पन्न हो सकता है का पूर्वानुमान (Prediction) दीर्घकृत अवधान में अहम भूमिका रखती है। इस सिद्धान्त के अनुसार संकेतों का सही पहचान करने की तत्परता और उक्त संकेत के उपस्थित होने की प्रत्याशा स्तर के बीच धनात्मक सहसंबंध होता है। अतः कोई विवेचित संकेत (Critical signal) के किसी समय विशेष के उपस्थिति की संभावित प्रत्याशा उक्त उत्तेजना का सही पहचान करने की मानसिक तत्परता को बढ़ा देता है। फलस्वरूप संकेतों का पता लगाने का सामर्थ्य बढ़ जाता है इस आधार पर दीर्घकृत अवधान की निपुणता उन्नत होती है।

Kumar Patil
Maharaja College, Ara.